



26879 - इफ्तार के समय रोजेदार की दुआ

प्रश्न

जब हम रोजेदार हों तो रोज़ा खोलते समय कौन सी दुआ पढ़ें ?

विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह तआला के लिए योग्य है।

उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि : "अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब रोज़ा खोलते थे तो यह दुआ पढ़ते थे :

ذَهَبَ الظَّمَأُ وَابْتَلَّتِ الْعُرُوقُ ، وَثَبَّتَ الْأَجْرُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى

“ज़हा-वज़्ज़मओ वव्वतल्लतिल उरूको व सब-तल अज्रो इन शा अल्लाहो तआला”

प्यास चली गई, रों तर होगई और यदि अल्लाह तआला ने चाहा तो पुण्य निश्चित हो गया।

इसे अबू दाऊद (हदीस संख्या : 2357) और दारकुत्नी (हदीस संख्या : 25) ने रिवायत किया है और इब्ने हज़र ने "अत-तल्खीसुल हबीर" (2/202) में कहा है कि : "दारकुत्नी ने फरमाया : इसकी इसनाद हसन (अच्छी) है।"

रही बात इस दुआ : "अल्लाहुम्म लका सुम्तो व अला रिज़क्रिका अफतरतो" की, तो इसे अबू दाऊद (हदीस संख्या : 2358) ने रिवायत किया है, और यह एक मुर्सल हदीस है, इसलिए वह ज़ईफ़ है। अल्बानी की किताब ज़ईफ़ अबू दाऊद (हदीस संख्या : 510).

इबादतों के बाद दुआ करने का शरीअत में एक बड़ा आधार है, उदाहरण के तौर पर नमाज़ों के बाद और हज़्ज के कार्यों के समापन के बाद दुआ करना, और इन शा अल्लाह रोज़े की इबादत उससे बाहर नहीं है, तथा अल्लाह तआला ने इस महीने में दुआ के महत्व को दर्शाने के लिए, दुआ की आयत और उसकी अभिरूचि दिलाने का वर्णन रोज़े की आयतों के बीच में किया है, और वह अल्लाह तआला का यह फरमान है :

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ [البقرة : 186].



“और जब आप से मेरे बन्दे मेरे बारे में प्रश्न करें तो (आप उन्हें बतला दें कि) मैं बहुत ही निकट हूँ, जब पुकारने वाला मुझे पुकारे तो मैं उसकी दुआ क़बूल करता हूँ, अतः लोगों को भी चाहिए कि वे मेरी बात मानें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वे सही मार्ग पाएं।” (सूरतुल बक्रा : 186).

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिय्या ने फरमाया :

अल्लाह सर्वशक्तिमान ने इस बात की सूचना दी है कि वह अपने बंदों से करीब है, पुकारने वाले की दुआ को जब वह उसे पुकारे तो क़बूल करता है, तो यह अल्लाह तआला उन्हें अपनी रूबूबियत की, उनकी मुराद पूरी करने की और उनकी दुआ को क़बूल करने की सूचना दे रहा है ; क्योंकि जब उन्होंने उसे पुकारा तो वास्तव में वे उसकी रूबूबियत पर ईमान रखने वाले हैं .
.. फिर अल्लाह ने उन्हें दो आदेश दिए हैं, चुनाँचे फरमाया :

فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ [البقرة: 173]

“अतः लोगों को भी चाहिए कि वे मेरी बात मानें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वे सही मार्ग पाएं।” (सूरतुल बक्रा : 186).

प्रथम : अल्लाह ने उन्हें अपनी इबादत करने और उसी से मदद मांगने का जो आदेश दिया है उसमें उसकी आज्ञा का पालन करें।

दूसरा : उसकी रूबूबियत और उसकी उलूहियत पर ईमान लाएं, और यह कि वह उनका रब (पालनहार) और उनका पूज्य है। इसीलिए कहा गया है कि : दुआ की कुबूलियत सही अक़ीदे और संपूर्ण आज्ञाकारिता से होती है क्योंकि अल्लाह तआला ने दुआ की आयत के तत्त्वपश्चात ही फरमाया है कि : "अतः लोगों को भी चाहिए कि वे मेरी बात मानें और मुझ पर ईमान लाएं।" "मजमूउल फतावा" (14/33).